RJPP, Vol. XXIII, No.II, April 25-Sept.25, ISSN (P): 0976-3635, (e):2454-3411, Impact Factor 8.858
https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.033

छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिकाः एक राजनीतिक विश्लेषण

डॉ0 दिलेश्वरी साहू
अतिथि व्याख्याता (राजनीति विज्ञान विभाग)
स्व. ठाकुर महाराज सिंह शासकीय
महाविद्यालय, थानखम्हरिया, जिला–बेमेतरा (छ.ग.)
इमेलः deleshwarsahu@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका का अध्ययन किया गया है। जिसमें छत्तीसगढ़ में अब तक हुए विधानसभा चुनावों का राजनैतिक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, हालांकि 15 राजनीतिज्ञों के विचारों का समावेश भी किया गया है। अन्य भारतीय राज्यों की अपेक्षा 90 विधानसभा सीटों में छत्तीसगढ़ आरक्षित वर्ग एवं गैर–आरक्षित वर्ग की महिला तथा निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में महिलाएँ चुनाव में उतरी हैं लेकिन इन महिलाओं में से राजनीतिक पार्टियों की टिकट वाली महिलाएँ ही निर्वाचित होकर विधानसभा तक पहुंच पायी हैं। इससे ज्ञात होता है कि इस राज्य में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी स्थानीय निकायों के साथ–साथ विधानसभा चुनावों में बेहतर हो रही है।

मुख्य शब्द

महिला जनप्रतिनिधि, महिला सशक्तिकरण, स्थानीय निकाय, महिला राजनीतिज्ञ।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 11/08/25
Approved: 20/09/25

डॉ0 दिलेश्वरी साहू

छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिकाः एक राजनीतिक विश्लेषण

RJPP Apr.25-Sept.25, Vol. XXIII, No. II, Article No. 33 Pg. 249-254
Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/rjpp-sept-2025-vol-xxiii-no2-261

https://doi.org/10.31995/rjpp.2025.v23i02.033

प्रस्तावना

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, यहाँ के किसी भी नागरिक को अपनी योग्यता, कुशलता और क्षमता के आधार नेतृत्व करने का अधिकार प्राप्त है, चाहे वह आरक्षित वर्ग से हो या अनारक्षित वर्ग से, अपनी इच्छा से वह राजनीतिक प्रतिनिधित्व करने हेतु सभी प्रकार के वांछित शर्तों को पूरा कर जनता की बहुमत से सत्ता पर आरूढ़ हो सकता है और समाज का प्रतिनिधित्व कर सकता है, जिसके लिए संविधान उसे पूरी तरह से बिना किसी भेदभाव के अधिकार प्रदान करता है। चाहे वह पुरूष हो या महिला, अमीर हो या गरीब, किसी भी जाति/वर्ग या समुदाय से हो, किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के हो, उसे संवैधानिक ढंग से उच्च पदों तक पहुंचने का का अधिकार है। प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ के संदर्भ में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। छत्तीसगढ़ प्रदेश को 25 वर्ष हो गये हैं, अब तक राज्य सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक क्षेत्र में विकास के अनेक आयाम प्राप्त कर चुका है। ''छत्तीसगढ़ के विकास एवं समृद्धि में महिलाएँ विविध क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा रही है।जहाँ एक ओर प्रदेश में महिला साक्षरता में सुधार, सामाजिक जागरूकता, आर्थिक रूप से स्वावलंबी एवं रोजगार की ओर उन्मुख हो रही है, वहीं राजनीतिक क्षेत्र में इनकी सहभागिता और सक्रियता में वृद्धि हुई है।''(साहू, 2017) छत्तीसगढ़ में महिलाओं के राजनीतिक सफर पर प्रकाश डालते हुए राजनांदगाँव जिला के खुज्जी विधानसभा क्षेत्र के विधायक का मानना है कि छत्तीसगढ़ विधानसभा में 18 प्रतिशत महिला विधायक (विधानसभा चुनाव–2018) है। यह पूरे देश में सर्वाधिक है। भारतीय समाज में एक महिला, बहन, बेटी, पत्नि, माँ जैसी तमाम भूमिका का निर्वाह करती है और इन भूमिकाओं के बाद घर की चार–दीवारी से निकलकर राजनीतिक हस्तक्षेप करती है, लेकिन महिलाओं के लिए राजनीति का रास्ता अभी सरल नहीं है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

कुमार, अरूण (2025) ''झारखण्ड राज्य की राजनीति में महिलाओं की भूमिका'' ने अपने अध्ययन में पाया कि झारखंड राज्य की स्थापना के बाद झारखंड के राजनीति में महिलाओं की स्थिति मिली जुली रही है, लेकिन स्थापना काल से लेकर अब तक राज्य के विधानसभा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की संख्या में वृद्धि हुई है। सबसे अधिक महिलाएं वर्तमान समय में निर्वाचित होकर विधानसभा में पहुंचने में सफल रही है। झारखंड स्थापना के बाद अगर लोकसभा की बात की जाए तो चार संसदीय क्षेत्र धनबाद, कोडरमा, जमशेदपुर, और सिंहभूम संसदीय क्षेत्र से महिलाएं प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं, जिसमें सबसे लंबे समय तक धनबाद संसदीय क्षेत्र से प्रो रीता वर्मा शामिल है। केंद्र की राजनीति में कोडरमा संसदीय क्षेत्र की सांसद श्रीमती अन्नपूर्णा देवी शिक्षा राज्य मंत्री एवं केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री पर आसीन होकर अपनी सराहनीय भूमिका निभा रही है। इससे यह स्पष्ट होता है झारखंड की महिलाएं राजनीतिक में अपनी भागीदारी व सहभागिता बढ़ाने में सफल रही है किंतु सीटों की संख्या के आधार पर इसका प्रतिनिधित्व आज भी कम है। स्थानीय स्वशासन में 50% महिलाओं का सीट आरक्षित करने के बाद महिला प्रतिनिधित्व की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। झारखंड की महिलाएं पहले की अपेक्षा राजनीतिक रूप से अधिक सषक्त हुई है तथा राजनीतिक गतिविधियों में अपनी सकारात्मक भागीदारी निभा रही है।

खान, जावेद (2022) ''राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका'' ने अपने अध्ययन में पाया कि भारत में, महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए शुरू किए गए आंदोलन में आमूल–चूल परिवर्तन आया है। यह माना गया है कि महिलाएं राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक राजनीतिक ताकत में बदल रही हैं। राजनीतिक दल महिलाओं की जरूरतों और आवश्यकताओं के प्रति उदासीन नहीं रह सकते हैं, जिनकी आबादी 586.5 मिलियन है और लगभग 48.46 प्रतिशत मतदाता हैं। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को सुदृढ़ करने के उपायों की आवश्यकता है। जब महिलाएं राजनीतिक क्षेत्र में शामिल होती हैं, तो सकारात्मक पहलू यह है कि वे न केवल अपने जीवन में सुधार लाने में सक्षम हैं, बल्कि अपने परिवारों और समुदायों के कल्याण को बढ़ावा देने में भी सक्षम हैं। राजनीतिक वातावरण के चर हैं,मनोवैज्ञानिक वातावरण, सामाजिक–आर्थिक वातावरण और राजनीतिक वातावरण। मापन ढांचे का विश्लेषण करने में, शामिल किए जाने वाले मुख्य पहलू हैं, भारतीय चुनावी ढांचे का परिचय, भारत में चुनावी आंकड़े, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और महिला समूहों का विकास करना है।

मेश्राम, बी. एन. (2018) ''भारतीय राजनीति एवं प्रशासन में महिलाओं की भूमिका'' ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि देश को आजाद हुए आज कई साल हो गये हैं जिसमें स्व. इंदिरा गांधी को छोड़कर जितने भी महिलायें राजनीति में आई है वे राजनीतिक रूप में डमी ही साबित हुई है। जब महिला किसी महत्वपूर्ण पद पर पहुंचती है तो उससे उम्मीद की जाती है कि वे आम महिलाओं की बेहतरी के लिए कुछ खास करेगी लेकिन ये उच्च कुल महिला राजनीतिज्ञ ऊंचे पद पर पहुंच कर अन्य महिलाओं के दर्द को दूर करना चाहती है तो उसे अन्य लोगों का सहयोग पूरी तरह नहीं मिल पाता है। महिला पर अत्याचार की घटनाऐं बड़ रही है, महिला सांसद एक शब्द नहीं बोल पाती है, इस बदहाली का एकमात्र कारण है कि महिलाओं की राजनीतिक चेतना में कमी। अब इस स्थिति को बदला जाना आवश्यक है। महिलाओं को राजनीतिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे पुरूष रिश्तेदारों के हाथों की कठपुलियां न बनी रह जाये। विधायिका में 33 प्रतिशत आरक्षण जरूरी है, राजनीतिक जागरूकता अति आवश्यक है। महिलाओं के राजनीतिक परिवेश को बदलने के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है, जैसे महिलाओं को राजनीतिक रूप से क्रियाशील बनाया जाये, स्वस्थ व सकारात्मक सामाजिक संरचना का निर्माण आर्थिक आत्मनिर्भरता और पारिवारिक उत्तरदायित्वों को सहज बनाया जाये। समुचित शिक्षा की व्यवस्था की जाये, नारी के प्रति सोचनें व समझने का नजरियां बदला जाये और उसे पूरी सुरक्षा दिया जाना चाहिए।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिला जनप्रतिनिधियों की भूमिका का अध्ययन करना।
2. राजनीतिक भागीदारी में महिला जनप्रतिनिधियों के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।

देश की प्रमुख राज्यों के विधानसभा परिषदों में महिला विधायकों की स्थिति

क्र.	राज्य	विधानसभा सीटों की संख्या	महिला विधायकों की संख्या	जीत का प्रतिशत
1.	छत्तीसगढ़	90	16	18.0
2.	झारखण्ड	82	11	13.0
3.	राजस्थान	200	27	13.0
4.	पश्चिम बंगाल	294	34	13.0
5.	दिल्ली	70	08	11.0
6.	उत्तरप्रदेश	403	47	11.0
7.	उत्तराखण्ड	70	08	11.0
8.	हरियाणा	90	08	10.0
9.	बिहार	243	26	10.0
10.	मध्यप्रदेश	230	17	7.0

देश के अन्य राज्यों में निर्वाचित महिला विधायकों की संख्या 10 प्रतिशत से भी कम है। यही नहीं छत्तीसगढ़ में स्थानीय निकायों में महिलाओं के 50 प्रतिशत आरक्षित सीट के बाद में यहाँ महिलाएँ अधिक संख्या से निर्वाचित हुई हैं।

भारत के राज्यों में पंचायत में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों का प्रतिषत

क्र.	राज्य	प्रतिशत	क्र.	राज्य	प्रतिशत
1.	उत्तराखण्ड	56.01	14.	सिक्किम	50.30
2.	छत्तीसगढ़	54.78	15.	हिमाचल प्रदेश	50.12
3.	असम	54.60	16.	कर्नाटक	50.05
4.	महाराष्ट्र	53.47	17.	आंध्रप्रदेश	50.00
5.	तामिलनाडू	52.98	18.	मध्यप्रदेश	49.99
6.	ओडिशा	52.68	19.	गुजरात	49.96
7.	केरल	52.41	20.	त्रिपुरा	45.23
8.	बिहार	52.20	21.	हरियाणा	42.12
9.	झारखण्ड	51.57	22.	पंजाब	41.79
10.	पश्चिम बंगाल	51.42	23.	अरूणाचल प्रदेश	38.98
11.	राजस्थान	51.39	24.	गोवा	36.72
12.	मणिपुर	50.69	25.	उत्तरप्रदेश	33.34
13.	तेलंगाना	50.34	26.	जम्मू कश्मीर	33.18

छत्तीसगढ़ स्थानीय चुनाव के साथ–साथ विधानसभा चुनाव में राज्य बनने के बाद हुए चुनाव में महिलाओं के प्रतिशत में वृद्धि हुई है।

क्र.	चुनाव वर्ष	कुल निर्वाचित महिला विधायक			
		अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अनारक्षित	कुल
1.	2003	01	04	01	06
2.	2008	01	05	05	11
3.	2013	03	05	02	10
4.	2019	02	04 (02)	07 (01)	13 (03)
5.	2023	05	10	04	19

कोष्ठक में प्रदर्शित संख्या उपचुनाव में विजयी महिला विधायकों की संख्या को दर्शाता है।

तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि राजनीतिक भागीदारी में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा प्राथमिक समंकों के लिए 15 स्थानीय राजनीतिज्ञों से साक्षात्कार के रूप में महिलाओं की राजनीतिक अभिरूचि व विचारों की सहायता से ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। द्वितीयक समंकों के लिए राज्य निर्वाचन आयोग की प्रकाशित दस्तावेजों, विभिन्न समाचार पत्र एवं इंटरनेट में उपलब्ध सामग्रियों का प्रयोग किया गया है। यह शोध प्ररचना वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक अनुसंधान प्ररचना के अंतर्गत आता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र प्रमुखतः छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का राजनीतिक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। जैसे–जैसे महिला शिक्षा में वृद्धि हो रही है, वैसे ही इनकी सशक्तिकरण के साथ–साथ राजनीतिक नेतृत्व या राजनीतिक सहभागिता में बढ़ रही है। वहीं विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में महिला छात्र नेताओं की संख्या भी बढ़ रही है। जहाँ से ये छात्राएँ राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता से रूबरू हो रहे हैं जिससे महिलाओं को नेतृत्व क्षमता को बल मिल रहा है। नेतृत्व के लिए उपयुक्त स्थान छात्रनेता या स्थानीय निकायों में पंच, सरपंच इत्यादि से होती है। इसमें आधुनिक सोशल मीडिया का भी योगदान है, किन्तु छत्तीसगढ़ राज्य में आधुनिक सोशल मीडिया का भी योगदान है। छत्तीसगढ़ राज्य में महिलाओं को विधायक, सांसद के लिए अधिक महत्व दे रहे हैं जिसमें महिलाएँ अपनी अच्छी योगदान देते हुए विभिन्न सामाजिक, महिला, किसानों एवं राज्य के विभिन्न मुद्दों को उठा रहे हैं। यह छत्तीसगढ़ राज्य में महिला सशक्तिकरण एवं नारीवादी प्रभाव को स्पष्ट करते जा रहा है।

सन्दर्भ

1. बावेल बसंतीलाल ''पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास योजनाएं'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 2009. 7.
2. चन्द्रशेखर बी.के. ''पंचायती राज इन इण्डिया' राजीव गांधी फाउण्डेशन, नई दिल्ली 2000.

3. दत्त सुनीता, ''राजस्थान में पंचायती राज कानून संग्रह'' ग्राफिक ऑफसेट, प्रिन्टर्स, जयपुर 1996.
4. देशपाण्डे निर्मला ''पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी'' कुरुक्षेत्र 1989.
5. ई.एस.के. ''पंचायती ए सिंथैसिस'' बाम्बे एशिया पब्लिशिंग हाउस 1961.
6. जोशी आर.पी. रूपा मंगलानी ''पंचायती राज के नवीन आयाम'' यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा. लिजयपुर 1998.
7. कुमार, अरूण ''झारखण्ड राज्य की राजनीति में महिलाओं की भूमिका'' द फ्युचर ऑफ नॉलेज : इंटरडिसिप्लनरी पाथवेस् टू इन्नोवेशन पब्लिवेशन, 2025, https://doi.org/10.5281/zenodo.15369532
8. खान, जावेद ''राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, मॉर्डन मैनेजमेंट, अप्लाइड साइंस एण्ड सोशल साइंस, अंक–04, भाग–02 (II) अप्रैल–जून; 2022.
9. मेश्राम, बी. एन. ''भारतीय राजनीति एवं प्रशासन में महिलाओं की भूमिका'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यूज़ एंड रिसर्च इन सोशल साइंसेज, अंक–06, भाग–04, 2018.
10. मोदी, अनीता, ''ग्रामसभा सशक्तिकरण की राह पर कुरुक्षेत्र अंक–07 मई 2013.
11. सिसोदिया यतीन्द्र सिंह,''पंचायती राज एवं अनुसूचित जाति महिला नेतष्त्व'' रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2000.
12. साहू, विनोद कुमार ''छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिलाओं का योगदान, नवीन शोध संसार, अंक–1, जनवरी–मार्च; 2017.
13. सिंह, सुमन्त एवं पुष्पेन्द्र शर्मा, ''श्रीनाथ पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास, आदित्य प्रकाशन, बीना, 2010.
14. रिपोर्ट, बी.सी.सी. 03.10.2023.